Edit with WPS Office

St. Lawrence High School

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

Hindi Study Material (06)

Class- 11 | पाठ - मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (भाग १) | Date: 10/07/2020

निबंधकार का परिचय

विद्यानिवास मिश्र संस्कृत के प्रकांड विद्वान, जाने - माने भाषाविद, हिंदी साहित्यकार और सफल संपादक के रूप में प्रतिष्ठित है। पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी के बाद अगर कोई हिंदी साहित्यकार **ललित निबंधों** को वांछित ऊंचाइयों पर ले गया तो हिंदी जगत में डॉ. विद्यानिवास मिश्र का ही जिक्र होता है।

पंडित विद्यानिवास मिश्र का जन्म **28 जनवरी 1925** को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के पकड़डीहा गांव में हुआ था।

मिश्र जी हिंदी के मूर्धन्य साहित्यकार थे।प्रोफेसर विद्यानिवास मिश्र को 'भ्रमारानंद' कहते थे और छद्यनाम से उन्होंने अधिक लिखा है। वे हिंदी के प्रतिष्ठित आलोचक एवं निबंध लेखक हैं। साहित्य कि इन दोनों ही क्षेत्रों में उनका कोई विकल्प नही है। वे हमेशा अपनी कोमल भावाभिव्यक्ति के कारण सराहे गए हैं। निबंध के क्षेत्रों में मिश्र जी का योगदान स्वर्ण अक्षरों में अंकित किया जाएगा। प्रो. विद्यानिवास मिश्र के ललित निबंधों की शुरुआत में पहला निबंध संग्रह 1972 ईस्वी में 'छितवन की छाँह' प्रकाश में आया। उन्होंने हिंदी जगत को ललित निबंध परंपरा से अवगत कराया। उनकी ललित निबंधों की महक साहित्य जगत में सदैव बनी रहेगी।

निष्कर्षत: रूप से यह कहा जा सकता है कि विद्यानिवास मिश्र जी का लेखन आधुनिकता की मार , देश काल की विसंगतियों और मानव की यंत्र का चरम आख्यान है। जिसमें पुरातन से आधुनिकतम एवं आधुनिकतम से पुरातन की बौद्धिक यात्रा करते है। मिश्र जी के निबंधों का संसार इतना बहुआयामी है कि प्रकृति लोकतत्व, बौद्धिकता, सृजनात्मकता, कल्पनाशीलता, काव्यात्मक, रचनात्मकता, भाषा की उर्वर सृजनात्मकता, संप्रेषणीयता इन निबंधों में एक साथ अन्तर्निहित है।

विद्यानिवास मिश्र जी की **हिंदी और अंग्रेजी में दो दर्जन** से अधिक पुस्तकें प्रकाशित है। इसमें 'महाभारत का काव्यार्थ' और 'भारतीय भाषादर्शन की पीठिका' का प्रमुख है। ललित निबंधों में 'तुम चंदन हम पानी', 'वसंत आ गया' और **शोध ग्रंथों** में 'हिंदी की शब्द संपदा' चर्चित कृतियाँ है।

अन्य ग्रंथ- कितने मोर्चे, चिड़िया रैन बसेरा, गांधी का करुण रस, स्वरूप विमर्श, तुलसीदास भक्ति प्रबंध का नया उत्कर्ष, बसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं आदि।

सम्मान- 1999 में भारत सरकार द्वारा साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त पद्म भूषण se सम्मानित।

सारांश

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध के रचयिता विद्यानिवास मिश्र जी एक ललित निबंधकार के रूप में विख्यात है। उनके निबंध में मौलिक चिंता, पांडित्य शैली, संस्कृति बोध तथा लोक जीवन के प्रति गहन संवेदना प्राप्त होती है। 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध में लेखक ने सीता, लक्ष्मण, भगवान राम एवं कौशल्या के जरिए आधुनिक युवक की त्रासदी को उजागर करने की नितांत कोशिश किया है। निबंधकार अपने अनुभवों के साथ ईश्वरी कथाओं को सम्मिलित कर लोक जीवन के प्रति गहरी संवेदनशीलता प्रकट किया है।

निबंध का सारांश निम्न अनुच्छेद के माध्यम से व्यक्त कर सकते है:

निबंध की शुरुआत लेखक के मन की उदासी से होता है। उनके उदासी की कोई खास वजह नहीं है। मन की उदासी प्राय: मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है। जब मन स्वस्थ, साहसी एवं मजबूत रहता है तब भयानक परेशानी भी अनायास ही सहज क्रम के समान प्रतीत होता है, वही मन कमजोर रहता है तो मामूली सी बात भी भयंकर चिंता में परिणत हो जाता है।

मिश्र जी की इसी बेचैनी की स्थिति में उनको दो-तीन रात पहले की एक घटना स्मरण हो उठता है; जहां उनका एक साथी, साथ में उनका पुत्र एवं महानगरीय परिवेश में पली एक मेहमान कन्या रात को नौ बजे संगीत कार्यक्रम को सुनने के लिए गए हुए थे। शहरों की असुरक्षित स्थिति एवं एक डेढ़ घंटे ही नहीं रात के बारह बजे तक उनका ना लौटना उनके दिमाग में दुश्चिंता की धारा को प्रवाहित कर रही थी। जिससे उनकी पत्नी झल्ला उठी। इतने में अचानक बारिश शुरू हो गई। बारिश की शुरुआत मन का आकुलापन एवं आजकल की असुरक्षित स्थिति से लेखक के मन में दादी- नानी द्वारा निरंतर गाए जाने वाले एक लोकगीत स्मरण हो उठा-

"मोरे राम के भीजै मुकुटवा,
लक्ष्मण के पटुकवा
मोरी सीता के भीजै सेनुरवा
त राम घर लौटहिं।"

मिश्र जी को बचपन में दादी- नानी द्वारा गायी गई यही गीत अर्थात उनकी विवशता एवं चिंतन पर उन्हें व्यंग्य सूझती थी। परंतु पिता के रूप में दादी- नानी की वहीं चिंता आज उनके मन को विद्रोहित करती है। अपने बच्चों की चिंता उनकी सुरक्षा एवं उनके साथ वहन किए हुए मान - प्रतिष्ठा की चिंता प्रत्येक माता पिता को ही होती है। जैसे पत्नी सीता, भाई लक्ष्मण के साथ राम का बनवास माता कौशल्या की व्याकुलता का कारण है। लेखक का मन कौशल्या के मन के तरंग के साथ जुड़ गया। राजा राम उनके प्रियजन के रूप में प्रकट हो गए। राम के वनवास से लौटकर आने से मन को ठीक उसी प्रकार संतोष होता है जिस प्रकार प्रियजन के वापस लौटने से होता है।

लेखक का मन कल्पनालोक में विचारने लगा, जहां उनके मन में राजा राम का उनके मुकुट के साथ अभिषेक हो गया। मुकुट के साथ ही उनके वनवास की यात्रा भी शुरू हो गई। मुकुट के साथ राजा राम सबके मन में प्रतिष्ठित हो गए। मुकुट के संग ही अयोध्या की मान- प्रतिष्ठा, मर्यादा, ऐश्वर्य एवं उत्कर्ष भी राजा राम के साथ वनवास चला गया। राजा राम के साथ ही उनके अंगरक्षक लक्ष्मण का कमरबंद दुपट्टा,

Edit with WPS Office
अखंड सौभाग्यवती सीता की मांग का सिंदूर भी असुरक्षा के घेरे में गिर गया।
कौशल्या की भाँति मिश्र जी इसी चिंता में डूबे रहते है कि 'कमरबंद दुपट्टा' अर्थात प्रहरी की जागरूकता उत्कर्ष, मर्यादा, मान- सम्मान एवं ऐश्वर्य के प्रतीक 'मुकुट' की रक्षा भावना में सदैव ही जागरूक रहे। उदात्त गुणों से परिपूर्ण ऐश्वर्य का प्रतीक 'मुकुट' कभी किसी बारिश था विपत्ति के ज्वार में भीगने न पाए।
नारी के सौभाग्य, पती का सुख का प्रतिक नारी के मस्तक पर सुशोभित उसकी मांग का सिंदूर होता है। वही सिंदूर सीता की मांग को उज्ज्वलित कर रहा है। सीता की मांग का सिंदूर असुरक्षित न हो पाए, परंतु राम के सुख की चिंता करने वाला समाज एवं सीता की मांग का सिंदूर तो राम को वनवास से अयोध्या वापस लौटने के लिए सक्षम रहा। लेकिन सौभाग्यवती सीता अपने प्रसव के दर्द को लेकर पुनः वनवास की एकांत ज्वाला को भोगने के लिए मजबूर हो गई। प्राचीन काल की यही परंपरा आधुनिक काल में भी अपना वर्चस्व बनाए हुए है। असुरक्षा के इस दौर में नारी ही सबसे अधिक उन कष्टों को झेलती है।
मिश्र जी अपने इस भावानुकूल मन में विचारते ही है कि भोर के चार बज जाते है। तब कहीं अचानक उनके पुत्र एवं कृष्णा का संगीत कार्यक्रम से आगमन होता है। लेकिन वर्षों से चले आ रहे वनवास की यात्रा को भोगते राम की कथा लेखक के मन में तब भी विराजमान है।बाहर बारिश थम चुकी है। पूरब से पूजा से की आभार से भी होने लगी है। लेकिन लेखक के मन में लोकमन से संबंधित स्मृतियों का क्रम निरंतर चलता रहा है। आज भी राम का मुकुट, लक्ष्मण का कमरबंद दुपट्टा, तथा सौभाग्यवती सीता की मांग का सिंदूर असुरक्षा एवं कौशल्या जैसी विश्व की लाखों-करोड़ों माताओं की दुश्चिंता के घोर बारिश में भीग रहा है। कौशल्या अभी भी अपने मुकुट, प्रहरी की जागरूकता एवं अखंड सौभाग्य का सिंदूर की प्रतीक्षा में व्याकुल है।
इस प्रकार पाठकों के मन को स्पर्श करते हुए निबंधकार अपने निबंध की समाप्ति करता है।

Teacher's Name - Riya Saha